Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

THINKING AND LANGUAGE

चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है :-

चिंतन में भाषा की भूमिका के समबन्ध में एक विचार यह रहा है कि चिंतन के लिए भाषा न केवल सहायक है, बल्कि आवश्यक भी। इस विचार के समर्थको के अनुसार भाषा के आभाव में चिंतन-संभव नहीं है। दूसरा विचार यह है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। इस विचार के समर्थकों के अनुसार भाषा के आभाव में भी चिंतन संभव है। वाटसन ने स्पष्ट शब्दों

में कहा है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है। उन्होंने यहां तक कहा कि भाषा और चिंतन में कोई मौलिक भेद नहीं है। उनके अनुसार भाषा के आंतरिक रुप को ही चिंतन कहते हैं। उन्होंने चिंतन को अव्यक्त भाषण, अन्तः भाषा की संज्ञा दी है। उन्होंने बच्चों के चिंतन की चर्चा करते हुए कहा कि छोटे बच्चे गणित के प्रश्नों का समाधान करते समय अपनी उंगलियों पर बोलते रहते है। किंतु जब वही बच्चे बड़े होते है तो मन ही मन बोल- बोल कर अपनी समस्या का समाधान करते है।

रेय के अनुसार मानव के समस्या समाधान में शाब्दिक मध्यस्थता का महत्वपूर्ण हाथ होता है। उन्होंने अपने अध्ययन मे पाया कि जिन प्रयोज्यों ने प्रयोगकर्ता को समस्या कि समाधान कि योजना समय से पहले बतला दिया उन्होंने अपने समस्या का समाधान उन प्रयोज्यों से अधिक सफलतापूर्वक किया,जिन्होंने अपनी योजना के सम्बन्ध में पहले कुछ नहीं बताया था।

ब्रेन ने भी चिंतन में भाषा के महत्व को स्वीकार किया है। इनके अनुसार भाषा नियमों के प्रभाव चिंतन पर परता है। भाषा नियमों का ज्ञान चिंतन क सरल बना देता है। स्पष्ट है कि अमूर्त-चिंतन बहुत अंशो में भाषा पर आधारित है। मिलनर ने अपने अध्ययन मे पाया कि सोचते समय कंठ मे उसी प्रकार की विद्युत क्रिया होती है, जिस तरह शब्दो को बोलते समय। उन्होंने प्रतोज्यों के कंठ पर एलेक्ट्रोड लगा दिया और उन्हें आदेश दिया गया कि वे समस्या के संबंध मे चिंतन करे। देखा गया कि उनके कंठ में उसी प्रकार का क्रिया प्रवाह उत्तपन हुआ, जिस तरह वास्तविक शब्दों को बोलते समय उत्तपन होता है।